मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ,...

(डॉ० हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर)

मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ, मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ ।।टेक ।।

मैं हूँ अपने में स्वयं पूर्ण, पर की मुझमें कुछ गन्ध नहीं।
मैं अरस अरूपी अस्पर्शी, पर से कुछ भी सम्बन्ध नहीं ।।1 ।।

मैं राग-रंग से भिन्न, भेद से, भी मैं भिन्न निराला हूँ।
मैं हूँ अखण्ड चैतन्य पिण्ड, निज रस में रमनेवाला हूँ ।।2 ।।

मैं ही मेरा कर्त्ता धर्ता, मुझमें पर का कुछ काम नहीं।
मैं मुझमें रमनेवाला हूँ, पर में मेरा विश्राम नहीं ।।3 ।।

मैं शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध एक, पर परणति से अप्रभावी हूँ।
आत्मानुभूति से प्राप्त तत्त्व, मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ ।।4 ।।